राजस्व (PUBLIC FIANCE)-UNIT-I

Name: Dr. Mayank Mohan, HOD Economics, M.M. College, Modinagar

Class & Year/ Semester: M.A. II/ III Semester **Date: 14-07-2020**

Paper: Public Economics **Code : G – 3006**

Topic of E-Content: - Nature, Scope & Significance of Pub. Finance

Book- लोकवित्त– डॉ0 वी0 त्यागी Jai Prakash Nath & Company

Book- सार्वजिनक वित्त एवं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार– डॉ0 टी0 आर0 जैन V L Pub.

Book- लोकवित्त– एम0 के0 गुप्ता VPM

राजस्व अथवा लोक–वित्त (PUBLIC FIANCE)

VK-2 **आशय (Meaning)-** लोक–वित्त का मूल अर्थ केन्द्रीय, प्रान्तीय तथा स्थानीय शासन सत्ताओं के आय तथा व्यय से है। लेकिन वर्तमान समय में यह अर्थ और अधिक विस्तृत और व्यापक हो गया है अब इसके अन्तर्गत उपरोक्त के अतिरिक्त वित्तीय प्रशासन, लेखा परीक्षण एवं वित्तीय नियंत्रण भी सम्मिलित किया जाता है। अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि ''यह वह विज्ञान है जो सार्वजनिक आय–व्यय, ऋण तथा वित्तीय प्रशासन, लेखा परीक्षण एवं वित्तीय नियंत्रण के मूल सिद्धान्तों का राजकोषीय क्रियाओं व राजकोषीय नीतियों का समाज और आर्थिक व्यवस्था पर होने वाली प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है।''

बुचनेन के अनुसार,'' सार्वजनिक वित्त राज्य की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है।''
Buchnan, Studies the economic activities of government as a unit.

लोक–वित्त की प्रकृति (Nature of Public Finance)-

सार्वजनिक वित्त अथवा कला है या दोनों इस बात का अध्ययन करने के लिये निम्नलिखित विश्लेषण आवश्यक है–

- **सार्वजनिक वित्त विज्ञान है (Public Finance is a Science)** ''विज्ञान किसी भी विषय का क्रमागत अध्ययन है जिसमें तथ्यों के कारण तथा परिणाम का अध्ययन किया जाता है'' **(Science is the systematic study of any subject which studies causal relationship between facts.)** सार्वजनिक वित्त में सरकार के आय तथा व्यय संबधी विषयों का क्रमागत अध्ययन किया जाता है। इसमें सरकार के आय तथा व्यय संबधी तथ्यों में पाये जाने वाले कारण तथा परिणाम के संबधों

(Causal Relation) का भी अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिये यदि कर ऊंची दर पर लगाये जाते हैं तो उनका उत्पादन एवं उपभोग पर विपरीत असर पडेगा।

विज्ञान दो प्रकार का होता है–

- **वास्तविक विज्ञान (Positive Science)** इसमें वास्तविक स्थिति का ज्ञान होता है कि क्या है? **(What is?)**
- **आदर्शात्मक विज्ञान (Normative Science)** इसमें आदर्श स्थिति का ज्ञान होता है कि क्या होना चाहिये? **(What out to be?)**

उदाहरणः सार्वजनिक वित्त के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कर कितने प्रकार के होते हैं, सरकारी आय में, व्ययों में, ऋणों में वृद्धि हो रही है इत्यादि। इनके ज्ञान से वास्वतिक तथ्यों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है अतः सार्वजनिक वित्त एक **वास्तविक विज्ञान है।** सार्वजनिक वित्त के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि कर कितनी मात्रा में लगाये जाने चाहिये, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष करों में से कौन–कौन से कर लगाये जाने चाहिये, सार्वजनिक व्यय कौन सी मदों में अधिक और कौन सी मदों में कम होना चाहिये इत्यादि आकलन ले स्पष्ट होता है कि सार्वजनिक वित्त एक **आदर्शात्म विज्ञान भी है।** यह सरकार की आय तथा व्यय के सुझाव भी देता है तथा इनकी वास्तविक स्थिति का भी अध्ययन करता है।

- **सार्वजनिक वित्त कला है (Public Finance is an Art)** प्रो0 जे0 एन0 केन्ज के अनुसार, '' कला निश्चित उद्रदेश्यों की प्राप्ति के लिये ज्ञान का प्रयोग है।'' **(Art is the application of knowledge for achieving definite objectives.)** कर लगाने की क्रिया निश्चित रूप से कला है। बजट बनाना, सार्वजनिक वित्त का पूर्ण अध्ययन कर कई व्यवहारिक समस्याओं के कारणों एवं समाधानों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि सार्वजनिक वित्त कला भी है।

  संक्षेप में कह सकते हैं कि सार्वनिक वित्त एक कला और विज्ञान दोनों है। यह एक वास्तविक विज्ञान एवं आदर्शात्मक विज्ञान भी है।

सार्वजनिक वित्त की प्रकृत्ति संबधी विभिन्न सिद्धान्त (Different Theories regarding the nature of Public Finance) सार्वजिक वित्त की प्रकृत्ति के संदर्भ में समय–समय पर निम्न सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं–

- लोक वित्त का विशुद्ध सिद्धान्त Pure Theory of Public Finance
- लोक वित्त का सामाजिक राजनीतिक सिद्धान्त Social Political Theory of Public Finance
- नये अर्थशास्त्र का सिद्धान्त Theory of New Economics
- कार्यात्मक वित्त का सिद्धान्त Theory of Functional Finance
- सक्रिय वित्त सिद्धान्त Theory of Activating Finance

लोक–वित्त की विषय सामग्री एवं क्षेत्र (Matter & Scope of Public Finance)-

1. **सार्वजनिक आय या लोक राजस्व (Public Revenue)-** इस विभाग में सरकारी आय की प्राप्ति एवं उसमें वृद्धि के उपायों, कराधान के सिद्धान्तों तथा उनसे संबधित अन्य समस्याओं का विवेचन एवं विश्लेषण किया जाता है।
2. **सार्वजनिक व्यय (Public Expenditure)-** इस विभाग में सरकारी आय व्यय के सिद्धान्तों तथा देश के आर्थिक जीवन पर अर्थात् उत्पादन, वितरण तथा विभिन्न वर्गों पर पडने वाले उसके प्रभावों का अध्ययन करता है।
3. **सार्वजनिक ऋण (Public Debt)-** इस विभाग के अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि सरकारी ऋण क्यों और कैसे लिये जाते हैं तथा उनका भुगतान किस प्रकार किया जाता है तथा इसका समाज पर क्या प्रभाव पडता है।
4. **वित्तीय प्रशासन (Financial Administration)-** इस विभाग के अन्तर्गत प्रशासनिक नियंत्रण के उपायों तथा बजट की तैयारी से संबधित समस्याओं का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है।

आधुनिक अर्थशास्त्रियों के मतानुसार लोक–वित्त के अन्तर्गत उपरोक्त के अतिरिक्त निम्न दो क्षेत्रों को ओर सम्मिलित किया जाना चाहिये–

1. **आर्थिक स्थिरता (Economic Stability)-** इस विभाग के अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि वर्तमान में सभी अर्थव्यवस्थाओं का, आर्थिक स्थिरता एक मुख्य उद्देश्य होता है, इसको बनाये रखने के लिये राजकोषीय नीति को किस प्रकार उपभोग में लाया जाये।
2. **आर्थिक वृद्धि (Economic Growth)-** आर्थिक स्थिरता की समस्या मूलभूत रूप से विकसित देशों में होती है। विकासशील देशों में तो मुख्य समस्या आर्थिक वृद्धि की होती है। ऐसी स्थिति में इन देशों में आय, बचत, निवेश एवं पूंजी–निर्माण में वृद्धि करने की आवश्यकता होती है जो राजकोषीय उपकरणों के प्रयोग से ही संभव हो सकता है।

लोक–वित्त का महत्व (Significance or Importance of Public Finance)-

सन् 1929–30 की महामंदी ने लोक–वित्त के संबध में अर्थशास्त्रियों की विचारधारा को परिवर्तित कर दिया है। उनके अनुसार अर्थव्यवस्था को व्यापार चक्रों के दुष्प्रभावों से बचाने एवं रोजगार प्रदार करने के लिये सरकार को आर्थिक क्रियाओं में हस्तक्षेप करना ही होगा। अतः लगभग पूरे विश्व में ही अब स्वतंत्र आर्थिक प्रणाली के स्थान पर मिश्रित आर्थिक प्रणालियां हैं। प्रो0 ए0 पी0 लरनर ने मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं के लिये कार्यात्मक वित्त Functional Finance की धारणा का प्रतिपादन किया जिसके अनुसार सार्वजनिक वित्त का उद्देश्य विभिन्न आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये प्रभावपूर्ण मांग Effective Demand in को अधिक या कम करना है। सार्वजनिक वित्त के महत्व में वृद्धि होने के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं–

1. सरकार के कार्यों में वृद्धि Increase in the activities of the government
2. आर्थिक जीवन पर प्रभाव Effect on Economic life
3. आय तथा धन के वितरण में समन्वय स्थापित करना To achieve adjustment in distribution of Income & Wealth
4. आर्थिक स्थिरता प्राप्त करना to achieve Economic stability
5. आर्थिक विकास की दर को तेज करना To accelerate Economic development
6. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कल्याण में वृद्धि
7. औषधियों का निर्माण एवं समाज विरोधी क्रियाओं पर नियंत्रण
8. प्राकृतिक साधनों का संरक्षण
9. परिवहन तथा संचार के साधनों पर नियंत्रण
10. सरकार की वित्तीय व्यवस्था एवं राजकोषीय नियंत्रण का प्रशासन

आर्थिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि लोक–वित्त की कार्यवाहियां निवेश तथा उपभोग पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती हैं अतः इनका प्रयोग कुल मांग को नियंत्रित करने वाली अर्थव्यवस्था को स्थिर करने में सरलता से किया जा सकता है। राजकोषीय नीति **(Fiscal Policy)** इसका मुख्य आधार होती है। राजकोषीय नीति से सरकारी आय एवं व्यय को पूर्ण नियंत्रण किया जा सकता है। सरकारी आय के तीन मुख्य कारकों **कराधान या करारोपण, जनता से उधार** तथा **ऋण प्राप्ति अथवा साख–निर्माण** कुशल राजकोषीय नीति से संभव है।